IJRAR.ORG E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

औपनिवेशिक भारत में स्वदेशी चिकत्सा के लिए संघर्ष (1850 -1947)

शुभ्रा शिवांगी
शोधार्थी
इतिहास विभाग
बी॰आर॰ए॰ बिहार विश्वविध्यालय मुज़फ्फ़रपुर (बिहार)

प्रांजलि (सहायक प्राध्यापिका)
शोध निर्देशिका
एम॰डी॰डी॰एम॰ कॉलेज मुज़फ्फ़रपुर (बिहार)

शोध सारांश

यह शोध अध्ययन 1850 से 1947 के बीच औपनिवेशिक काल में स्वदेशी चिकित्सा के लिए किये गए राष्ट्रव्यापी आन्दोलन का विश्लेषण करता है | ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन द्वारा पाश्चात्य चिकित्सा को संरक्षण प्रदान करने तथा आयुर्वेद ,यूनानी ,सिद्ध व अन्य स्वदेशी चिकित्सा पद्धतिओं को हाशिये पर डाले जाने से स्वदेशी चिकित्सकों (वैद्य, कविराज, हकीम) और राष्ट्रवादीयों मे असंतोष उत्पन्न हो गया | इस असंतोष ने धीरे धीरे एक संगठित राष्ट्रवादी प्रतिक्रिया का रूप ले लिया तथा स्वदेशी चिकित्सा को भारतीय सांस्कृतिक विरासत, वैज्ञानिक परंपरा और आत्मनिर्भरता के प्रतीक के रूप मे पुनर्स्थापित करने के लिए व्यापक आंदोलन चलाये गए | इस आंदोलन के तहत स्वदेशी चिकित्सा संस्थाओं की स्थापना, पत्र – पत्रिकाओं के माध्यम से वैचारिक संघर्ष किया गया | गांधीवादी विचारधारा ने भी इस आंदोलन को व्यापक आधार प्रदान किया | यद्यपि औपनिवेशिक सरकार द्वारा विभिन्न क़ानूनों और नीतियो के माध्यम से इस आंदोलन को असफल बनाने की कोशिश की गयी फिर भी यह आंदोलन सफल रहा तथा ब्रिटिश सरकार को स्वदेशी चिकित्सा को मान्यता देनी पड़ी |

कुंजी शब्द- औपनिवेशिक , स्वदेशी , आंदोलन , चिकित्सा

औपनिवेशिक भारत में स्वदेशी चिकत्सा के लिए संघर्ष (1850 -1947)

भूमिका

औपनिवेशिक भारत मे चिकित्सा केवल सार्वजनिक स्वास्थ्य का विषय नहीं था बल्कि यह शासन व्यवस्था ,राजनीति और सांस्कृतिक प्रभुत्व का भी प्रश्न था | ब्रिटिश प्रशासन द्वारा पाश्चात्य चिकित्सा को वैज्ञानिक ,उन्नत तथा सर्वमान्य बताकर श्रेष्ठता सिद्ध करने की कोशिश की गयी | जबकि स्वदेशी चिकित्सा पद्धतियों को पिछड़ा, अवैज्ञानिक तथा अप्रभावी बताकर हाशिए पर डालने का प्रयास किया गया | इसके फलस्वरूप सम्पूर्ण भारत मे स्वदेशी चिकित्सा के सम्मान और पुनर्स्थापना के लिए “पुनरूथान आंदोलन” की शुरुआत की गयी | धीरे धीरे यह आंदोलन केवल स्वदेसी चिकित्सा आंदोलन न रह कर प्राचीन भारतीय संस्कृति, गौरवशाली परंपरा और राष्ट्रीय अस्मिता की रक्षा का आंदोलन बन गया था |

[1]चिकित्सा के इतिहास लेखन के शुरुआती इतिहासकारों ने भारतीय ज्ञान विज्ञान को केवल धर्म तथा अंधविश्वास से जोड़ कर देखा तथा भारतीय विज्ञान की सृजनात्मक चेतना को सिरे से खारिज कर दिया परंतु डेविड अर्नोल्ड , मार्क हैरिसन , जॉर्ज बासल्ला तथा फिलिप मार्टिन जैसे इतिहासकारों ने भारतीय विज्ञान एवं स्वदेशी चिकित्सा ज्ञान के पतन के लिए औपनिवेशिक नीति तथा राजनीतिक कारणों को जिम्मेदार ठहराया |ब्रिटिश आरंभ मे तो भारतीय विचारों और आचरण के प्रति ग्रहणशील रहे परंतु 19वीं सदी के शुरुआती वर्षों से वे विज्ञान, प्रोद्योगिकी तथा चिकित्सा क्षेत्र को अपने 'सभ्य बनाने के परम लक्ष्य' की प्राप्ति के लिए श्रेष्ठ और प्रभावी उपकरण के रूप मे देखने लगे थे |1

अतिपुरातन सभ्यता वाले भारतवर्ष के हजारों वर्ष लंबे इतिहास मे ज्ञान – विज्ञान की मौखिक एवं लिखित परम्पराएँ थीं | इन परम्पराओं मे देशी तथा विदेशी दोनों तत्वों का मिलन होता रहा था | इन परंपराओं के मिलन के फलस्वरूप भारतीय चिकित्सा एवं विज्ञान का कभी विकास हुआ तो कभी ह्रास हुआ | 18वीं सदी के अंतिम तथा 19वीं सदी के प्रारम्भिक चरणों मे यूरोपीय प्राच्यवादीयों ने भारत को एक ऐसे प्राचीन सभ्यता सम्पन्न देश के रूप मे चित्रित किया था ,जो प्राचीन ग्रीक तथा रोमन सभ्यताओं के समकक्ष और कई मामलों मे उससे कहीं बेहतर था |[2]

औपनिवेशिक काल मे ब्रिटीशों द्वारा पाश्चात्य चिकित्सा का प्रचार प्रसार तेजी से किया गया | वे चिकित्सा को सत्ता के उपकरण के रूप मे उपयोग कर रहे थे, जैसा की मार्क हैरिसन ने अपनी पुस्तक "पब्लिक हैल्थ इन ब्रिटिश इंडिया" मे बताया था | वे लिखते हैं की भारत मे स्वास्थ्य नीतियाँ केवल जनकल्याण हेतु नहीं थी बल्कि ब्रिटिश सत्ता को स्थायी बनाए रखने का साधन थी | 19वीं सदी के भारत मे पाश्चात्य वैज्ञानिक विचार और क्रिया कलाप मे चिकित्सा का केंद्रीय स्थान था | कंपनी काल तथा उसके बाद के कई दशकों तक औपनिवेशिक चिकित्सा सेवा भारत के मुख्य वैज्ञानिक अभिकरणो मे से एक बन गयी थी | डेविड अर्नोल्ड ने अपनी पुस्तक 'द न्यू कैंब्रिज हिस्ट्री ऑफ इंडिया :साइन्स ,टेक्नालजी एंड मैडिसिन इन कोलोनियल इंडिया' तथा इसके विस्तारित संस्करण मे भारत मे चिकित्सा के सामाजिक इतिहास पर काफी विस्तृत चर्चा की है | यह पुस्तक औपनिवेशिक नीतियो , समाज पर उसके प्रभाव तथा राजनीतिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए भारतीय परंपरा एवं संस्कृति को जिस प्रकार कुचलने का प्रयास किया गया, उसका विस्तृत सार प्रस्तुत करता है | 19वीं सदी के मध्य मे बंगाल और दक्षिण – पूर्वी भारत मे कंपनी के क्षेत्रीय विस्तार के साथ एक ऐसे संस्था की आवश्यकता पड़ी जो कंपनी के सैनिक अधिकारियों तथा सैन्यकर्मियों की आवश्यकता को पूरा कर सके | प्लासी के युद्ध के छ: वर्षों के बाद 1763ई मे 'बंगाल मेडिकल सर्विस' की शुरुआत भारतीय चिकित्सा सेवा (IMS) के तर्ज पर की गयी |बाद मे ऐसी ही चिकित्सा सेवाओं की शुरुआत मद्रास तथा बॉम्बे मे भी की गयी |[3]

1° **<u>स्वदेशी चिकित्सा के लिए आरंभिक संघर्ष</u>** – यद्यपि चिकित्सा और स्वास्थ्य के क्षेत्र मे दखलंदाज़ी आरंभ मे औपनिवेशिक राज्य की वैज्ञानिक अभिरुचियों से अभिप्रेरित थी | डेविड काफ के अनुसार – प्रचयवादी निजी मूल्य तंत्र मे स्वावलंबन के लिए समन्वयवादी योजनाओं के पक्षधर थे | जबकि आंग्लवादी परंपरागत मूल्यों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण रुख रखने की अपेक्षा इस बात से प्रभावित थे की ब्रिटिश जीवन शैली को मूल रूप मे अंगीकार किए बिना वास्तविक परिवर्तन संभव नहीं है |[4]

i)**<u>मेडिकल रजिस्ट्रेशन कानून</u>** – ब्रिटिश सरकार ने पाश्चात्य चिकित्सा के प्रसार के लिए 'मेडिकल रजिस्ट्रेशन कानून' लागू कर दिया | जिसके अनुसार आयुर्वेदिक एवं यूनानी चिकित्सक तथा स्वदेसी चिकित्सा के लिए भी रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक माना गया परंतु ये रजिस्ट्रेशन केवल ब्रिटिश मेडिकल कॉलेजों व भारत मे पाश्चात्य चिकित्सा शिक्षा केंद्र के चिकित्सकों को ही दिया गया था |इस कानून ने सरकारी अस्पतालों ,डिस्पेन्सरी ,नगरपालिका तथा निजी सेवा के लिए भी स्वदेसी चिकित्सकों का मार्ग अवरुद्ध कर दिया | कई प्रान्तों मे वर्षों से सेवा दे रहे स्वदेशी चिकित्सकों पर मुकदमे किए गए तथा जुर्माने लगाए गए |

औपनिवेशिक मेडिकल काउंसिल ने स्वदेशी चिकित्सा संस्थान की डिग्री को कानूनी रूप से अवैध ठहराया |[5] यह कानून न केवल वैध – हकीमों बल्कि जनता के बीच भी व्यापक असंतोष का कारण बना |

[1] Adas M. 'Machine As The Measure of Men: Science, Technology And Ideologies of Western Dominance',Cornell University Press, Ithaca And London,1989.p.3-4

[2] Kopf,D. 'British Orientalism And The Bengal Renaissance: The Dynamic of Indian Modernization,1773-1835' Firma k.l. Mukhopadhyay. Calcutta 1969.

[3] Crowford, D.G. 'A History of The Indian Medical Service 1600-1913'.(Londan 1914) p.197-221.

[4] Kopf,D. 'British Orientalism And The Bengal Renaissance : The Dynamics of Indian Modernization, 1773-1835' Firma K.L. Mukhopadhyay, Calcutta.(India 1969) p-278.

[5] Jeffery,R. 'The Politics of Health In India'.University of California Press 1988.

ii)**वैध -हकिम आंदोलन** – मेडिकल रजिस्ट्रेशन कानून के विरोध मे वैद्यों, कविराज एवं हकीमों ने बंगाल मे समितियां बनाई तथा आंदोलन की शुरुआत की | 'वैद्य समाज', 'नेशनल मेडिकल एसोशिएशन' तथा नवजागरण समितियों ने ब्रिटिश नीतियो के खिलाफ रैलियाँ निकाली |

भारत मे स्वदेशी चिकित्सा की रक्षा हेतु 1890 ई मे पुनरुथान आंदोलन की शुरुआत की गयी थी | हालांकि यह बहुत हद तक राष्ट्रवाद के अभ्युदय का ही परिणाम था | चिकित्सा संबन्धित प्राचीन ग्रन्थों तथा आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति को भारतीयों द्वारा व्यावहारिक महत्व का माना जाता था | शुरुआती चरण मे 'स्वदेशी पुनरुधार आंदोलन' को 1895 ई मे गोंडल के महाराज भागवत सिंह जी की शोध रचना 'अरयन मेडिकल साइन्स' के प्रकाशन से पर्याप्त प्रोत्साहन मिला |[6] कविराज गणनाथ सेन ने इस बात का खंडन किया कि "आयुर्वेद पुराना तथा अवैज्ञानिक उपचार पद्धति है |" आयुर्वेद के पृष्ठपोषकों का दावा था कि भारत जैसे गरम जलवायु वाले देश के लिए स्वदेशी चिकित्सा पद्धति ही उपयुक्त है |[7] स्वदेशी चिकित्सा पुनरुद्धार आंदोलन दो मोर्चों पर संघर्ष कर रहा था | एक ओर तो यह आयुर्वेद को लोकप्रिय और सांस्कृतिक दृष्टि से पाश्चात्य चिकित्सा के बेहतर विकल्प के रूप मे प्रस्तुत कर रहा था तो दूसरी ओर नीम हकीम से आयुर्वेद को बचाने का प्रयास कर रहा था | इस कड़ी मे केरल मे आयुर्वेदिक आंदोलन के अग्रदूत पी॰ एस॰ वारियर ने 1902ई मे आयुर्वेद का घोषणा पत्र जारी करते हुए 'आर्य वैद्य समाज' का प्रवर्तन किया |[8]

आयुर्वेद के ही भांति हकीम अजमल खान ने यूनानी चिकित्सा पद्धति को भी आधुनिक बनाने का प्रयास किया | अजमल खान प्रांतीय चिकित्सा पंजीकरण अधिनियम के पारित होने से चिंतित थे क्यूंकी ये अधिनियम केवल पाश्चात्य चिकित्सा के चिकित्सकों को ही मान्यता देते थे | जबकि देशी चिकित्सक चाहते थे कि उन्हे राज्य कि ओर से समान मान्यता और आर्थिक सहायता दी जाए परंतु स्थिति ऐसी हो गयी थी कि उन्हे चिकित्सा क्षेत्र मे अछूत माना जाने लगा था |[9]

Iii)**आयुर्वेदिक – यूनानी पुनर्जागरण कि शुरुआत** – स्वदेशी तथा पाश्चात्य चिकित्सा विज्ञान के बीच प्रतिद्वंदिता का सबसे ज्यादा व्यावहारिक क्षेत्र एक – दूसरे पर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करना था | जब पाश्चात्य चिकित्साशास्त्र जीवाणु विज्ञान ,परजीवी विज्ञान तथा हस्तक्षेपकारी सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों के माध्यम से नई अधिकारिता कायम करने का प्रयास कर रहा था, उसी समय भारत मे स्वदेशी चिकित्सा के पुनर्जागरण और नवजीवन स्फुरण मे लोगों की अभिरुचि बढ़ रही थी |[10] औपनिवेशिक सरकार जानती थी कि सत्ता को बचाने तथा उसके प्रसार के लिए भारतीयों को इसमे शामिल करना आवश्यक है | इसी उद्देश्य के लिए यह आवश्यक था कि चिकित्सा जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्र मे भारतीयो को भी उचित चिकित्सा शिक्षा उपलब्ध कराया जाए परंतु स्वदेशी पुनर्जागरण के कारण केवल पाश्चात्य चिकित्सा शिक्षा मे भारतीय शामिल होने से कतराते थे | अतः 1824 मे कलकत्ता तथा 1826 मे बॉम्बे मे देशी चिकित्सा संस्थाएं स्थापित कि गयी | कलकत्ता का 'नेटिव मेडिकल इंस्टीट्यूशन' कि स्थापना कि गयी | साथ ही संस्कृत कॉलेज मे आयुर्वेद कि शिक्षा के लिए 'चरक' एवं 'सुश्रुत' की रचनाओं का उपयोग किया जाता था ,जबकि मुस्लिम छात्रों के लिए कलकत्ता के मदरसों मे 'यूनानी' चिकित्सा की तालिम दी जाती थी | बॉम्बे मे भी अनुवाद और बोलचाल की भाषा के माध्यम से ऐसी ही शिक्षा प्रारम्भ की गयी थी |[11]

औपनिवेशिक भारत के प्रथम गवर्नर जनरल लॉर्ड विलियम बेंटिक ने 1833 ई मे 'नेटिव मेडिकल इंस्टीट्यूशन' के गठन मे सुधार लाने तथा उसके लाभों को व्यापक बनाने के लिए एवं सरकारी अपेक्षाओं के अनुरूप उपयुक्त प्रबंधन व शिक्षण तंत्र का निर्माण करने के उद्देश्य से बंगाल मे एक मेडिकल कमीशन का गठन किया | इस समिति ने सुझाव दिया कि इंस्टीट्यूशन, मदरसों तथा संस्कृत महाविध्यालय मे चलने वाले देशी चिकित्सा शिक्षा को बंद कर दिया जाए | इसके स्थान पर अँग्रेजी माध्यम से शुद्ध पाश्चात्य चिकित्सा शिक्षा देने वाले महाविध्यालय खोले गए |[12] मेडिकल कमीशन कि अनुशंसा पर 1835 ई मे 'नेटिव मेडिकल इंस्टीट्यूशन' को बंद कर दिया गया | इस तरह पाश्चात्य और स्वेदेशी चिकित्सा पद्धति के बीच सहयोग तथा मैत्रीपूर्ण सह अस्तित्व का युग समाप्त हो गया | देशी चिकित्सा विज्ञान के संरक्षण और शिक्षण कि सौम्य प्राच्यवादी नीति का स्थान एक असहिष्णु अङ्ग्ल्वादी नीति ने ले लिया, जो स्वदेशी चिकित्सा के लिए घातक सिद्ध हुआ | 1835 ई के बाद यह धारणा और बलवती हो गयी कि देशी चिकित्सा व्यवसाय पिछड़ेपन और

[6] Leslie, C. 'Interpretation of Illness: Syncretism In Modern Ayurveda' In Charles Leslie And Allen Young (eds.),Path To Asian Knowledge,pp-179 (Barkley: University Of California Press 1992.

[7] Naidu,T.R. Ethirajulu 'The Ayurvedic System' ,Madras 1918. P-10

[8] Nair K.V. 'A Biography Of Vaidyaratnam P.S. Varier', Arya Vaidyasala Kottaikkal,1993.

[9] Azmal Khan To Sir Pardey Lukis, Home (Medical) 41, July 1916, NAI.

[10] Leslie C. 'Interpretations Of Illness : Synecretism In Modern Ayurveda ; Path To Asian Medical Knowledge. (Barkley C.A. 1992) p-179.

[11]Gupta,B. 'Indigenous Medicine In Nineteenth And Twentieth Century Bengal',Charles Lesslie (Eds.) 'Asian Medical System'. A Comperative Study',Berkley C.A. 1976. P.369-70.

[12] The Century Of The Medical College ,Bengal 1834-35. Calcutta 1935. P.3-7.

बर्बरता कि निशानी है जबकि पाश्चात्य चिकित्सा एक अधिक उन्नत सभ्यता का प्रमाण है | जेम्स रेनोल्ड मार्टिन ने 'चिकित्सा महाविध्यालय' के स्थापना कि तुलना विलियम बेंटिक के 'सतीप्रथा उन्मूलन' से कि थी |[13]

ब्रिटिश सरकार की पाश्चात्य चिकित्सा नीतियो के खिलाफ 19वीं – 20वीं सदी मे कई प्रमुख वैद्यों, हकीमो तथा राष्ट्रवादी नेताओं का भी साथ मिला | पंडित मदनमोहन मालवीय, पंडित गजानन शंकर ओझा, लक्ष्मण शास्त्री जोशी, तिलक एवं कई प्रमुख लोगों ने आयुर्वेद के पुनर्मूल्यांकन पर बल दिया | राष्ट्रवादी नेताओं द्वारा पाश्चात्य चिकित्सा एवं औषधियों के बहिष्कार का आह्वान किया गया | बाल गंगाधर तिलक ने स्वदेशी औषधियों को जनऔषधि माना ,वहीं रवीन्द्रनाथ टैगोर ने आयुर्वेद को वैज्ञानिक आधार देने की वकालत की थी | इसी कड़ी मे पं॰ मदनमोहन मालवीय ने बनारस मे 'आयुर्वेदिक महाविध्यालय' की स्थापना की थी | महात्मा गांधी स्वदेशी चिकित्सा के सबसे बड़े समर्थक थे | 'रॉयल एशियाटिक सोसाइटी' की बॉम्बे शाखा के आरंभिक भारतीय सदस्यों मे एक भाऊदाजी ने आयुर्वेदिक ग्रन्थों के ज्ञान का उपयोग ऐसी देशी दवाओं के अनुसंधान मे किया जो 'कुष्ठ रोग' का उपचार कर सके | सन 1860 के दशक मे दाजी ने कुष्ठ रोग के उपचार के लिए जो प्रयोग किए थे उसके आधार पर पाश्चात्य चिकित्सकों द्वारा 'चौलमुगरा तेल' का अपनाया जाना इस बात का स्पष्ट प्रमाण था की आधुनिक औषधशास्त्र को देने के लिए भारत के पास पारंपरिक ज्ञान का विपुल भंडार था |[14]

2° **<u>स्वदेशी चिकित्सा के लिए आंग्ल – प्राच्य विवाद</u>** – पाश्चात्य चिकित्सा के प्रसार के लिए किए गए विभिन्न प्रयास के बावजूद भी इसके उभरने की गति काफी धीमी रही | इसका मुख्य कारण था देसी चिकित्सा की सतत उपलब्धता और प्रत्यक्ष उपादेयता | देसी चिकित्सा किसी भी अन्य क्षेत्र की अपेक्षा अधिक प्राचीन तथा सांस्कृतिक दृष्टि से रोग निवारक विश्वासों और और प्रचलनों का विज्ञान था | ब्रिटिश सरकार के लिए यह चिंता का विषय था | कई ब्रिटिश प्राच्यवादी लेखकों तथा समर्थकों ने स्वदेशी चिकित्सा के पक्ष मे बयान दिये परंतु अधिकतर आंग्लवादियों ने समय समय पर भारतीय चिकित्सा पद्धतियों को लेकर विवादित बयान दिये | हालांकि 1810 से 1830 के मध्य बेंजामिन हायने तथा व्हाइट ला एंसलाई ने मद्रास मे एवं एच. एच. विल्सन ने बंगाल मे मूल आयुर्वेदिक ग्रन्थों का अध्ययन शुरू किया | 1838 ई मे जे. फोर्बिस रॉयली ने 'एंटीक्विटी ऑफ हिन्दू मैडिसिन' नमक पुस्तक लिखी | 1845 ई मे टी. ए. वाइज़ कि 'कमेंटरी ऑन द हिन्दू सिस्टम ऑफ मैडिसिन' प्रकाशित हुई | इन लेखकों ने अपनी पुस्तक मे स्वदेसी चिकित्सा पद्धति कि काफी आलोचना कि थी | यद्यपि वाइज़ ने एक ओर तो प्राचीन भारत मे प्रचलित चिकित्सा ज्ञान कि प्रशंसा कि वहीं दूसरी ओर उनका मानना था कि भारतीय अपनी प्राचीन उपलब्धियों से पूर्णत: अनिभिज्ञ हैं |[15]

चार्ल्स मोरहेड ने स्वदेशी चिकित्सा को वैद्य – हकीमों का विवेकहीन, अंधविश्वासपूर्ण तथा आपराधिक अनुभववाद कि संज्ञा दी एवं उसके प्रभाव को समाप्त करने मे 'ग्रांट मेडिकल कॉलेज' कि भूमिका का अहम माना | लॉर्ड कर्ज़न ने 1899 ई मे एक चिकित्सा सम्मेलन मे कहा था कि –'विज्ञान दूरगामी परिवर्तन कि ताकत रखता है | यह अधिक प्रभावी शासन मे सहायक और बलवती हो रही राष्ट्रवादी भावनाओं के समय ब्रिटिश शासन के लिए विधि निर्माण कि नई शक्ति है |' इंडियन मेडिकल सर्विस के महानिदेशक पार्डी ल्यूकिस ने 1916 ई मे इंपीरियल लेजिस्लेचर के वाद – विवाद के दौरान यह स्वीकार किया कि भारत मे नब्बे प्रतिशत आबादी देहातों मे रहती है तथा पाश्चात्य चिकित्सा तक उनकी पहुँच नहीं है इसीलिए देशी चिकित्सा का यथा संभव समर्थन करना आवश्यक है ताकि आमलोगों कि स्वास्थ्य संबंधी बुनियादी आवश्यकताएँ पूरी कि जा सके |[16]

3.**<u>धार्मिक कारण</u>** – 19 वीं सदी के भारत मे टीकाकरण एक ऐसा हस्तक्षेप था जो कारगर होने का दावा करने के करण व्यावहारिक महत्व का तो था परंतु देशी चिकित्सा पर पाश्चात्य चिकित्सा के बढ़ते बोध को भी प्रमाणित करता था | 1767 ई मे जे. एच. हालवेल ने लंदन मे 'कॉलेज ऑफ फिजिसियन्स' को दिये विवरण मे टीकाकरण की देशी पद्धति 'वेरिओलेशन' की तीखी आलोचना की थी तथा 'वैक्सीनेशन' को अधिक सुरक्षित माना था परंतु भारतीयों द्वारा वैक्सीनेशन' का भारी विरोध किया जाता था | दरअसल चेचक को हिन्दू देवी 'शीतला माता' के साथ जोड़कर देखा जाता था | लोगों का मानना था की देवी चेचक के ज्वर और फोड़े-फुंसिओ के माध्यम से अपनी विस्मयकारी उपस्थिति का एहसास करती है इसलिए भजनों, प्रार्थनाओं, मनौतियों तथा शीतल औषधियों द्वारा इस बाधा से मुक्ति के प्रयास किए जाते थे |[17]

---

[13] Martin J.R.,'Notes On The Medical Topography Of Calcutta', Calcutta 1837. P-60.

[14] Bunkingham J.M., 'Medicine And Confinement: Leprosy In Colonial South India',PhD Thesis. (University Of Sydney 1996) p.107-81.

[15] Wise,T.A. 'Commentary On The Hindu System Of Medicine' 2nd Edition. London 1860. P.i-v, xix.

[16] Proceeding Of The Indian Legislative Council 1916-17, 65. P.337-349.

[17] Nicolas R.W.,'The Goddess Shitla And Epidemic Smallpox In Bengal' J.A.S.,41(1981) p.21-44.

हिंदुओं मे अपवित्रीकरण की भावना से टीकाकरण के प्रति उपजी आशंका और गहरी हो गयी तथा इस अफवाह को हवा मिली कि ब्रिटिश टीकेदार और उनके सहायक निजी स्वार्थ और कटुता के कारण भारतीयों पर छाप (टीका) लगाना चाहते हैं परंतु बाद मे हैजा और प्लेग के नियंत्रण के लिए अपनाए गए उपायों कि भांति टीकाकारण भी चिकित्सा के मामले मे औपनिवेशिक हस्तक्षेप के सांस्कृतिक प्रतिरोध का महत्वपूर्ण मुद्दा बन गया |[18]

4**. <u>स्वदेशी चिकित्सा के पुनरुथान मे पत्र -पत्रिकाओ कि भूमिका</u>** – औपनिवेशिक भारत मे स्वदेशी चिकित्सा का पुनरुथान अनेक रूपों मे दिखाई दिया | आयुर्वेद के मूल संस्कृत ग्रन्थों का संस्कृत से अँग्रेजी भाषा मे अनुबाद ने इस आंदोलन को शास्त्रीय अधिकारिता प्रदान की तथा इसकी रचनाओं को पाठकों के विशाल समुदाय तक पहुंचाया | के. एन. पणिक्कर का मानना था कि हिन्दू चिकित्सा को संशोधित करने के लिए किए जा रहे प्रयास सांस्कृतिक और बौद्धिक पुनरुधार कि धाराओं से जुड़ा था | 1902 ई मे वारियार ने 'धन्वन्तरी' नामक पत्रिका प्रकाशित कि जो केरल मे स्वदेशी चिकित्सा का मुखपत्र बन गया | उनकी स्वदेशी चिकित्सा एवं औषधियों पर लिखी गयी पुस्तकों ने आमजन के लिए देशी चिकित्सा को अधिक सुलभ बना दिया था |[19] इसके अलावे 'आर्य भेषज', 'वैद्यक प्रकाश', 'काया चिकित्सा', 'चिंतामणि', 'तिब्ब ए मशहीह', 'हाकिम उल हिन्द' जैसी पत्रिकाओं ने भी स्वदेशी चिकित्सा के पुनरुथान हेतु जन जागरूकता बढ़ाने मे महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी | स्वदेशी चिकित्सा को लोकप्रिय बनाने के लिए समाचार पत्रों मे विज्ञापन छपवाए जाते थे | साथ ही चिकित्सा संबन्धित लेखों का बड़े पैमाने पर प्रकाशन शुरू किया गया | प्राचीन चिकित्सा ग्रन्थों का उद्धरण अँग्रेजी भाषा मे ही नहीं बल्कि स्थानीय भाषाओं मे भी किया जाने लगा था | चिकित्सा पत्रिकाओं ने संस्कृत के मूल ग्रन्थों से प्राप्त उद्धरणों की झड़ी लगा दी थी |[20]

5.**<u>स्वदेशी दवा उद्योग की स्थापना</u>** – स्वदेशी चिकत्सा आंदोलन ने पहली बार संगठित भारतीय दवा कंपनीयों को जन्म दिया | इस के तहत 'बैद्यनाथ', 'हमदर्द', 'झंडू', 'नागार्जुन फार्मा' जैसे दवा उद्योग की नींव रखी गयी गयी थी | इसी तरह पाश्चात्य चिकित्सा के प्रभावकारी संस्थानिक ढांचों का अनुसरण करते हुए कई आयुर्वेदिक औषधालयों की स्थापना की गयी | कविराज चन्द्रकिशोर ने 1878 ई मे कलकत्ता मे पहले आयुर्वेदिक औषधालय की नींव रखी | इसके 20 वर्षों के बाद वैद्य पंडित डी. गोपालचारलु ने मद्रास मे प्रथम स्वदेशी औषधालय की शुरुआत की थी |[21]

6.**<u>स्वदेशी चिकित्सा के लिए राजनीतिक दबाव</u>** –

i**<u>.) महामारी कानून का विरोध</u>** -औपनिवेशिक भारत मे बुबोनिक प्लेग पहली बार 1898 ई मे बॉम्बे प्रांत मे फैलना शुरू हुआ जो 1900 ई के अंत तक पूरे भारत मे महामारी के रूप मे प्रसारित हो गया | वर्ष 1914 के अंत तक 80 लाख लोगों की मृत्यु प्लेग के कारण हो गयी | दशकों तक ब्रिटिश सरकार की अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों मे इस बात के लिए आलोचना होती रही | वेनिस मे आयोजित स्वास्थ्य सम्मेलन मे भारतीय बन्दरगाहों से जहाज द्वारा माल ढ़ोए जाने पर प्रतिबंध लगाने पर गंभीरता से विचार किया जाने लगा | इस आर्थिक क्षति के भय से सरकार ने 'एपिडेमिक डिजीज एक्ट' लागू कर दिया | यह औपनिवेशिक काल मे स्वास्थ्य संबंधी क्रूरतम क़ानूनों मे से एक था | इस कानून के तहत सरकार को प्लेग के संदिग्ध रोगियों को अनिवार्य रूप से अस्पताल मे भर्ती करने ,प्रभावित घरों को और संपत्ति को नष्ट करने ,रेल यात्रियो की जांच करने और मेलों व तीर्थ यात्रा पर रोक लगाने का अधिकार मिल गया | इन उपायों से अंतर्राष्ट्रीय विवाद तो शांत हो गया लेकिन भारत के गाँव ,कस्बों तथा नगरों मे इस कानून के विरुद्ध व्यापक प्रतिरोध शुरू हो गया|

अंतत: 1898-99 मे सरकार को सामाजिक प्रतिरोध से बचने के लिए कठोर कानून मे आंशिक संशोधन करना पड़ा | भारत सरकार चिकित्सा और स्वास्थ्य पदाधिकारीयों द्वारा लिए जाने वाले वैसे निर्णयों के प्रति सावधान हो गयी जो राज्य तथा जनता के बीच के सम्बन्धों पर दूरगामी प्रभाव डाल सकते थे |[22]

[18] Arnold D. 'Colonizing The Body :State, Medicine And Epidemic Disease In 19th Century India', University of California Press Barkley LosAngeles 1993. P.143-144.

[19] Pannikar K.N.,'Indigenous Medicine And Cultural Hizmany: A Study Of The Revitalization Movement In Kerlam' S.H.,8 (1992) p. 283-308.

[20] Sardesai ,P.,'Indigenous Medical Practioners And Colonial Rule In India: A Study In The Production Of Medical Knowledge In Andhra, 1880-1930' , Unpublished Article 1996.

[21] -do-

[22] Kumar,D. 'Science And The Raj: 1857-1905', Oxford University Press, 1995. P -10.

Ii)**भारतीय राजनीतिक एवं गैर राजनीतिक संस्थाओं द्वारा प्रतिरोध** –

a)स्वदेशी चिकित्सा के प्रसार के लिए 'इंडियन मेडिकल काँग्रेस' ने 1894 ई मे कलकत्ता मे पहली बैठक आयोजित की जिसमे जॉर्ज वॉट तथा कानीलाल डे के 'देशी दवाओं के विस्तारित उपयोग' के आह्वान के समर्थन मे अनेक प्रस्ताव पारित किए गए। ब्रिटिश सरकार ने इन प्रस्तावों को गंभीरता से लिया तथा देशी दवाओं के अनुसंधान के लिए 'इंडिजिनस ड्रग्स कमिटी' का गठन कर दिया।[23]

b)भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस ने वर्ष 1918 और 1920 ई मे आयुर्वेदिक तथा यूनानी चिकित्सा की उपयोगिता के दावों की चर्चा करते हुए देशी चिकित्सा पद्धतिओ के अनुसार शिक्षा और चिकित्सा के लिए विधालयों, महाविधालयों तथा चिकित्सालयों की स्थापना की मांग संबन्धित कई प्रस्ताव पारित किए।

यद्यपि काँग्रेस ने 1920 के चुनावों का बहिष्कार किया फिर भी व्यवस्थापिका सभा ने स्वदेशी चिकित्सा का मुद्दा सदन मे उठाया। बंगाल एवं मद्रास की सरकारें देशी चिकित्सा पद्धतियों की जांच के लिए समितियां गठित करने के लिए राजी हो गयी।[24] इन समितियों मे मद्रास मे 1921 ई मे गठित समिति सबसे प्रभावशाली थी। इस समिति के अध्यक्ष मो॰ उस्मान तथा सचिव जी॰ श्रीनिवासमूर्ति थे। श्रीनिवासमूर्ति ने आयुर्वेद को बुद्धिसम्मत तथा वैज्ञानिक संपूर्णता के दावों के समर्थन मे ब्रजेन्द्रनाथ शील, गणनाथ सेन और जगदीशचन्द्र बोस का उदाहरण प्रस्तुत किया। हालांकि उस्मान समिति के प्रतिवेदन के प्रति पाश्चात्य चिकित्सा संस्थान के अनेक सदस्यों ने नाराजगी एवं संदेह प्रकट किया फिर भी राजनीतिक दबाव के कारण मद्रास सरकार ने उस्मान समिति के प्रतिवेदन को स्वीकार कर लिया तथा 'स्कूल ऑफ इंडियन मेडिसिन' के स्थापना की अनुमति दे दी। वर्ष 1924 मे मद्रास के गवर्नर ने इस विद्यालय का उदघाटन किया एवं श्रीनिवासमूर्ति को इसका निदेशक नियुक्त किया गया। 1932 ई मे इस संस्था के निदेशक के अधिकारों मे बढ़ोतरी करते हुए उन्हे प्रांत के देशी चिकित्सकों के पंजीकरण का भी दायित्व सौंप दिया गया।[25]

निष्कर्ष – औपनिवेशिक काल मे स्वदेशी चिकित्सा के लिए किए गए संघर्षपूर्ण आंदोलन के फलस्वरूप औपनिवेशिक सरकार को जांच कमिटियाँ गठित करनी पड़ी। हालांकि इस कमिटी को बनाने का उद्देश्य स्वदेशी चिकित्सा का मूल्यांकन बताया गया था परंतु इस कमिटी की रिपोर्ट पूर्णत: पक्षपाती था। भारत मे स्वदेशी चिकित्सा के लिए हो रहे चौतरफा संघर्ष तथा शासन कायम रखने के उद्देश्य से सरकार द्वारा भारतीयों की कुछ मांगों को मान लिया गया। कुछ आयुर्वेदिक एवं यूनानी कॉलेजों को मान्यता दे दी गयी। स्वदेशी औषधि की बिक्री एवं दावा उत्पादन के लिए लाइसेन्स जारी किया गया तथा पाश्चात्य चिकित्सा महाविध्यालय मे आयुर्वेदिक चिकित्सा शिक्षा को भी स्थान दिया जाने लगा। यह स्वदेशी चिकित्सा के जनसंघर्ष की बड़ी उपलब्धि थी।

यद्यपि स्वदेशी चिकित्सा के लिए जनसंघर्ष केवल देशी चिकित्सा पद्धति के अस्तित्व की लड़ाई नहीं थी बल्कि यह भारतीयों के सांस्कृतिक पहचान, बौद्धिक स्वतन्त्रता, स्वास्थ्य स्वावलंबन तथा राष्ट्रीय आंदोलन का महत्वपूर्ण हिस्सा था। यह जनसंघर्ष ही आगे चलकर स्वतंत्र भारत मे 'आयुष विभाग' की शुरुआत की प्रेरणा बना। इसप्रकार स्वदेशी चिकित्सा के लिया किया गया यह जनसंघर्ष भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय बन गया।

संदर्भ सूची

1. *Adas,M. 'Machine as the measure of men: Science, technology and ideologies of Western Dominance. Ithica,NY: Cornell University Press,1989.*
2. *Kopf,D. 'British orientalism and the Bengal renaissance: The dynamics of Indian modernization,1773-1835. Calcutta 1969.*
3. *Crawford,D.G. 'A history of the Indian Medical Service:1600-1913', London 1914.*
4. *Jeffery,R. 'The politics of health in India', University of California Press 1988.*
5. *Khan, A. 'Letter to Sir Pardey Lukis. Home (Medical) National Archives of India, July 1916.*
6. *Leslie, C. 'Interpretations of illness: Syncretism in modern Ayurveda. University of California Press 1992.*
7. *Naidu, T.R. 'The Ayurvedic system'. Madras 1918.*

[23] Report Of 'Proceedings Of The Central Indegenous Drugs Committee Of India', (Calcutta 1889) Appendix p.1-2 Home (Medical) 15-18 Dec. 1895, NAI.

[24] Jeffery,R. 'Doctors And Congress: The Role Of Medical Men And Medical Politics In Indian Nationalism' see Mike Shepardsen And Colin Simons (Editor), 'The Indian National Congress And The Politcal Economy Of India;1885-1985' (Uldershot 1988). P-161.

[25] Murthy,G.S., 'The Government Of Indian Medical School' Handbook Of The Indian Science Congress: 27th Session 1940, Madras. (Madras 1940) p.86-92.

8. *Nair, K.V. 'A biography of Vaidyaratnam P.S. Varier'. Arya Vaidya Sala 1983.*
9. *Gupta, B. 'Indigenous medicine in nineteenth and twentieth century Bengal' C. Lesslie (edition) 'Asian Medical system: A comperative study'. Berkley,C.A. 1976.*
10. *Martin, J.R. 'Notes on the medical topography of Calcutta'. Calcutta 1837.*
11. *Mukhopadhyay, G. 'History of Indian medicine from the earliest ages of the present Time', vol.i. Calcutta 1923.*
12. *Wise, T.A. 'Commentary on the Hindu system of Medicine', 2nd edition. London 1860.*
13. *Arnold, D. 'Colonizing the Body: State, Medicine and Epidemic disease in 19th century India'. University of California Press 1993.*
14. *Singh, G. and Joshi, P.D. 'Impact of European science and technology on development of modern Ayurveda during 19th century'. I.J.H.S. 17(1982).*
15. *Pannikar, K.N. 'Indegenous medicine and cultural hizmany: A study of the revitalization movement in keralam'. S.H.,8 (1992).*
16. *Kumar,D. 'Science and the Raj: 1857-1905'. Oxford University Press, 1995.*
17. *Jeffery, R. 'Doctors and Congress: The role of medical men and medical politics in Indian Nationalism'. See Mike sheoardsen and Colin Simons (edi.), 'The Indian National Congress and the political economy of Indian: 1885-1985'.*